टिप्पणियाँ

1

केवल समास और अव्ययी भाव समास

''समसनं समास:'' यह समास का सामान्य लक्षण है। एकीभवन के अर्थ में विद्यमान होने से सम् उपसर्गपूर्वक असु धातु से ''भावे'' इस सूत्र द्वारा घञ् प्रत्यय होने पर समास शब्द निष्पन्न होता है। समसनम् नाम बहुत सारे पदों के मेल से एकपदी होता है। पठितुम् इच्छति इस अर्थ में पिपठिषति इत्यादि में सन् प्रत्यय होने पर एकपदी भाव होता है। तो भी यहाँ समाज होने पर आपत्ति है। इसके निराकरण के लिए ''पाणिनीयसङ्केतसम्बन्धेन समास पदत्वम्'' ऐसा समास का लक्षण करना चाहिए। ''सह सुपा'' इत्यादि सूत्रों द्वारा विहित ''समासपदवाच्या भवन्तु'' ऐसा संकेत पाणिनी द्वारा किया गया है। एवम् यहाँ तात्पर्य यह है कि पाणिनी द्वारा जिनमें समाज संज्ञा की गई है वे ही समास पद माना जाना चाहिए।

समास पदविधियों में अन्यतम है। और जहाँ जो पद होते हैं उनमें ''समर्थ:पदविधि'' इस सूत्र बल से समान अर्थ होते हैं। और सामर्थ्य के दो भेद होते हैं (1) एकार्थीभाव सामर्थ्य (2) अपेक्षासामर्थ्य। समास में एकार्थीभावसामर्थ्य यही सिद्धान्त है।

समास के भेद के विषय में बहुत सी विप्रतिपत्ति है। सामान्यतया समास के पञ्च (पाँच) भेद होते हैं। (1) केवल समास (2) अव्ययीभावसमास (3) तत्पुरुष समास (4) द्वन्द्व समास (5) बहुब्रीहि समास। समास के भेद विषय में अन्तिम पाठ में विस्तारपूर्वक आलोचन (विचार) किया जायेगा इस पाठ में केवल समास और अव्ययी भाव समास का विस्तारपूर्वक विवरण है। अत: उन दोनों के स्वरूप का वर्णन किया जा रहा है।

केवल समास - अव्ययी भाव समास, तत्पुरुष समास, बहुब्रीहि द्वन्द्व समास इनको समास की विशेष संज्ञाये हैं। इन विशेष संज्ञाओं से निर्युक्त जो समास है वही केवल समास अथवा सुप्सुपा समास कहलाता है।

अव्ययी भाव समास–जिस समास में प्राय: पूर्व पदार्थ प्रधान होता है अव्ययी भाव समास कहा जाता है। पूर्व पद का अर्थ पूर्व पदार्थ। पूर्वपद का अर्थ प्रधान जिस में हैं वही पूर्वपदार्थ

प्रधान है। जैसे अधिहरि: भक्ति: अस्ति यहाँ पर अधिहरि पद में अव्ययीभाव समास है। यहाँ अधि पूर्व पद है। उसका अर्थ ही अधिकरण (आधार) है। हरि उत्तर पद है। जिसका अर्थ विष्णु है। यहाँ पर अधिहरि इस समस्त पद हरि आधार है। और वाक्य का हर्याविकरणिका: भक्ति: ऐसा अर्थ है। और यह सुस्पष्ट है कि अधिहरि इस पद में विद्यमान अधि इस पूर्व पद के अर्थ की प्रधानता है।

इस पाठ में क्रमश: केवल समास और अव्ययीभाव समास सूत्रों की आलोचना की जा रही है।

समास विधायक सूत्रार्थ लेखन अवसर पर ''बहुत समस्यते'' इस पद का प्रयोग है। समस्थते इस पद का अर्थ होता है। समास संज्ञक होना। यथा–''सहसुपा'' इस सूत्र द्वारा सुबन्त की सुबन्त के साथ समास होता है। इसका तात्पर्य होता है सुबन्त की सुबन्त के साथ समास संज्ञा होती है। यही दूसरी अवधारणा है।

''व्याकरणाध्यनकाले कुत्र अवधानं देयम्''

बहुत जगह शास्त्रों में मूल के कष्ठपाठ भी आवश्यक नहीं होना चाहिए। परन्तु व्याकरण के रूप साधना चाहिए क्योंकि सूत्रों के उल्लेख के आगे रूप साधे गये हैं। सूत्र का लक्षण ही बोला जाता है। क्योंकि लक्षण जिस शब्द स्वरूप का संस्कार करता है वही शब्दस्वरूप उसका लक्ष्य कहा जाता है। अत: व्याकरण के छात्र द्वारा उसके लक्षण और लक्ष्य का अच्छी प्रकार से ज्ञान होना चाहिए। जो लक्षण का अर्थ जानता है वही लक्ष्य का संस्कार करने के लिए होता है। अत: लक्षण का अर्थ लक्ष्य यह त्रितय निष्ठा से जानना चाहिए। यहीं व्याकरण अध्ययन के रास्ते हैं। निश्चित रूप से जो वैद्य रोग जानता है और औषधि जानता है और औषधि का प्रयोग भी जानता है। इनमें एक भी नहीं जानता तो वह किस प्रकार का वैद्य है? इस प्रकार वही निश्चित रूप से वैयाकरण है जो लक्षण जानता है, अर्थ जानता है और लक्ष्य जानता है और लक्षण से लक्ष्य का संस्कार करता है।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़कर आप सक्षम होंगे–

- समास में कितने प्रकार के सामर्थ्य अपेक्षा की जाती है यह जान पाने में;
- केवल समास विधान किससे होता है यह जान पाने में;
- अव्ययी भाव समास विधायक सूत्र कौन से हैं यह जान पाने में;
- अव्ययी भाव समास में समासान्त प्रत्यय कौन से हैं यह जान पाने में।

1.1 ''समर्थ: पदविधि:''

सूत्रार्थ– पद सम्बन्धि जो कार्य उसका एकार्थीभाव सामर्थ्य के समान पदात्रित होता है।

सूत्र व्याख्या–सूत्र के छः विधियों में पाणिनीय सूत्रों में यह परिभाषा सूत्र है इस सूत्र में दो पद हैं। वहाँ समर्थः यह प्रथमाविभक्ति का एकवचनान्त पद है। पदविधि यह प्रथमा विभक्ति एकवचनान्त पद है। विधान किया जाता है अर्थात् विधीयते ऐसा विधि कार्य है। वि उपसर्ग पूर्वक डू धाञ् धारण और पोषण इस अर्थ में धातु से ''उपसर्गे धोः किः'' इस सूत्र से कर्म में कि प्रत्यये होने पर विधि शब्द निष्पन्न होता है। पदों की विधि। इसमें षष्ठीतत्पुरुष समास है। इससे पद के सम्बन्धी विधि ऐसा अर्थ होता है। समर्थः यह पद यहाँ समर्थ आश्रित होने पर लाक्षणिक है। सूत्र का अर्थ होता है– पद सम्बन्धी विधि समर्थ आश्रित होता है। समर्थ आश्रितः इसके **अर्थ में सामर्थ्यवान् जो पद उन पदों को आश्रित प्रवर्न्तमान होना।**

सामर्थ्य दो प्रकार का होता है–एकार्थीभाव रूप और व्यपेक्षा भाव रूप। समासादि पक्ष विधियाँ तो एकार्थीभाव का सामर्थ्य ही स्वीकृत किया गया है यही सिद्धान्त है। इससे आयी हुई **जो समासादिपद विधियों में एकार्थीभावक सामर्थ्यवान् उन पदों को जिन पर आश्रित होते हैं।**

एकार्थी भाव सामर्थ्य की प्रक्रिया दशा में प्रत्येक अर्थवत् के अलग गृहित होने वाले पदों की समुदाय शक्ति से विशिष्ट एक अर्थ प्रतिपादित होता है। जैसेः- राजपुरुषः इसमें समन्वय प्रस्तुत किया जा रहा है।

राज्ञः पुरुषः यह वाक्य है। यहाँ राजपद का राजन् यह अर्थ है। उसके उत्तर में ङस् प्रत्यय का सम्बन्ध यही अर्थ है। पुरुष शब्द का पुरुष यही अर्थ है। इसका उत्तर सुप्रत्यय स्वार्थिक है। और ऐसे समान पदों के मिलन से राज सम्बन्धी पुरुष यही अर्थ होता है। इससे यह सुस्पष्ट होता है कि वाक्य में प्रत्येक पदों का स्वकीय अर्थ है। ''षष्ठी'' इस सूत्र से यहाँ समास किया जाता है। और समास और अलौकिक विग्रह वाक्य में होता है। और राजन् ङस् पुरुष सु यह अलौकिक विग्रह वाक्य होता है किन्तु समास एकार्थीभावरूप में सामर्थ्य में ही होता है। अतः इनके द्वारा अलौकिक विग्रह वाक्य में एकार्थी भाव रूप सामर्थ्य स्वीकृत किया जाता है। स्वीकृत होने पर एकार्थी भाव रूप में सामर्थ्य में राजन् ङस पुरुष सु इस समुदाय और समुदाय शक्ति से ही राजसम्बन्धी पुरुष यह विशिष्ट अर्थ के लिए बोध होता है। पदों की पृथक्-पृथक् उपस्थिति नहीं होती है। अतः राजन् ङ्स पुरुष सु यहाँ समुदाय शक्ति से विशिष्ट अर्थ प्रतिपादित होने से एकार्थीभावरूप सामर्थ्य होता है।

परिभाषा सूत्र दीपक के समान होता है। जिस प्रकार दीपक एकस्थान पर स्थित होकर पूरे घर में प्रकाश फैलाता है उसी प्रकार परिभाषा सूत्र एक जगह स्थित होकर भी सम्पूर्ण अष्टाध्यायी में प्रवर्न्त हो रहे है। और जहाँ-जहाँ पदसम्बन्धी कार्य वहाँ-वहाँ उसका कार्य समर्थ पद आश्रित होकर ही होगा यही सूत्र का सार है।

अत्रेदं बोध्यम्–(यहाँ यह ज्ञान होना चाहिए)

समास उन दो पदों के मध्य ही होता है उन दो पदों के अर्थों के मध्य परस्पर सम्बन्ध होता है। यथा–राज्ञः पुरुषः उन दोनों राजपुरुष पदों में अर्थों के मध्य परस्पर सम्बन्ध होता है। अतः यहाँ समास होता है। इससे राजपुरुष प्रयोग सिद्ध होता है। जिन दो पदों के अर्थों में परस्पर सम्बन्ध नहीं होता है उन पदों के मध्ये समान नहीं होता है। जिस प्रकार पुत्रः राज्ञः पुरुषः देवदत्तस्य यहाँ राजा के पुत्र से सम्बन्ध है और पुरुष का देवदत्त के साथ सम्बन्ध है। राजा और

टिप्पणियाँ

पुरुष के मध्य में तो सम्बन्ध नहीं हैं। अत: यहाँ राजपुरुषों: में समाप्त नहीं होता है। यही इस सूत्र से बोध होता है।

समास के तीन फल एकपद, एकस्वर और एक भाव होता है। समस्त पद एकपद होता है। अत: उसका ऐकपद्य होता है। समास में एक ही उदात स्वर होता है। अत: उसका एकस्वर होता है। यहाँ उदात ही मुख्य स्वर है। समास में व्यपेक्षाभाव सामर्थ्य नहीं होता है ऐसा कहा गया है। समास में एकार्थीभाव है। इस फलत्रय को लाघव कहा जाता है। समास शब्द का लाघव को संक्षेप भी अर्थ है। यहाँ समास में एक से अधिक पद होते हैं वहाँ प्राय: सभी पदों के अन्त में एक ही विभक्ति दिखाई देती हैं। अन्य विभक्तियाँ लुप्त हो जाती है। अत: विभक्तियों की अल्पता से लाघव होता है।

शब्दावली–समास प्रकरण में बाहुल्य से प्रयुक्त कुछ पारिभाषिक शब्दों का परिचय नीचे दिया जा रहा है।

(क) वृत्ति–समाज एक से अधिक पदों का होता है। ये पद समास के अवयव होते हैं। वहाँ प्रत्येक पदों का अपना कुछ अर्थ होता है। अवयवभूत पदों का अर्थ से अलग भिन्न अर्थ कहा जाता है, प्रतिपादित किया जाता है उससे ही परार्थाभिद्यान कहलाता है। यहाँ अभिधान इस करण में ल्युट् प्रत्यय है। दूसरा अर्थ जिससे प्रतिपादित होता है वह वृत्ति है। दूसरे अर्थ में वृत्ति है जो परार्थवृत्ति कहलाता है। राज्ञ: पुरुष: इस उदाहरण में दोनों पदों के अलग अर्थ है। परन्तु उन दोनों के समास के लिए कुछ राज के सम्बन्धीत पुरुष यह विशिष्ट अर्थ कहा जाता है। प्रतिपादित किया जाता है। विशिष्ट अर्थ किसी एक पद का नहीं है। अत: यह विशिष्ट अर्थ समास अवयवपदों के अर्थों से अलग अर्थ से है। समास पदार्थोभिद्यान कहा जाता है। अत: यही वृत्ति है।

संस्कृत व्याकरण में पाँच वृत्तियाँ होती हैं।

(1) कृदन्त वृत्ति

(2) तद्धितान्तवृत्ति

(3) समासान्तवृत्ति

(4) एकशेषवृत्ति

(5) सनाद्यान्तवृत्ति

(ख) विग्रह–वत्यर्थावबोधक वाक्य विग्रह कहलाता है। वृत्ति के अर्थ के बोध के लिए जो पदसमुदायात्मक वाक्य को प्रयुक्त किया जाता है वह विग्रह कहलाता है। वह विग्रह लौकिक और अलौकिक भेद से दो प्रकार के होते हैं।

(ग) लौकिक विग्रह–राजपुरुष यह समास वृत्ति है। उसका राज्ञ: पुरुष: जो विग्रह लौकिक संस्कृत भाषा में व्यवहार करने योग्य वह लौकिक विग्रह कहलाता है।

(घ) अलौकिक विग्रह–व्याकरण प्रक्रिया सख्त सौकर करने के लिए राजपुरुष: इस वृत्ति का

राजन् ङस् पुरुष सु इस प्रकृति का विभक्ति प्रत्यय सहित प्रकट करना अलौकिक विग्रह: कहा जाता है। इसका लोक में प्रयोग नहीं होता है। केवल प्रक्रिया में ही प्रयोग होता है। (लौकिक लौकिभाषा)

स्वपदविग्रह और अस्वपर विग्रह इस भेद से भी विग्रह दो प्रकार होता है।

(ङ) स्वपद विग्रह–समास के पदों के अवयवों को लेकर किया गया विग्रह स्वपदविग्रह कहलाता है। अपने स्वयं के पद को प्रद्युवत कर किया गया विग्रह स्वपदविग्रह है। यथा:– राजपुरुष इस समास के अवयव में राजन पुरुष दो पद हैं। उन दोनों पदों का प्रयोग कर विग्रह किया गया है जैसे: राज्ञ: पुरुष:। अत: यही स्वपदविग्रह है। जहाँ समास विकल्प से किया जाता है वहाँ लौकिक स्वपदविग्रह: सम्भव होता है। यहाँ नित्य समास होता है वहाँ लौकिक स्वपद विग्रह नहीं होता है। लौकिक विग्रह हमेशा स्वपरविग्रह ही होता है।

(च) अस्वपद विग्रह–समाज के पदों के अवयवों को बिना ग्रहण किये या बिना प्रयोग किये किया गया विग्रह अस्वपद विग्रह: होता है। अपने पदों का बिना प्रयोग कर किया गया विग्रह अस्वपद विग्रह कहलाता है। जैसे:–उपशमम् (अव्ययीभाव समास में समास के अवयवों में उपराम ये दो पद हैं। उन दोनों में (उप और राम) उप इस पद को त्यागकर उसके अर्थ के लिए दूसरा समीप इस पद का प्रयोग कर विग्रह होता है-समस्य समीपम् (राम के समीप)। अत: यही अस्वपदविग्रह है। नित्यसमास के लौकिक में अस्वपदविग्रह होता है। अलौकिक विग्रह: तो कभी भी अस्वपर विग्रह नहीं होता है।

1.2 ''प्राक्कडारात् समास:''

सूत्रार्थ:–''कडारा: कर्मधारय'' इस सूत्र से प्राकृ समास यह अधिकार है।

सूत्रव्याख्या–यह अधिकार सूत्र है। इस सूत्र में तीन पद हैं। यहाँ प्राक् यह पूर्वार्थवाचक अवयव पद है। कडारात् यह पंचमी विभक्ति का एकवचनान्त पद है। समास यह प्रथमा विभक्ति का एकवचनान्त पद है। यहाँ प्राक् पद दो बार आवृत हुआ है। सूत्र में कडारापद से ''कडारा कर्मध ारये'' सूत्र से ग्रहण किया गया है। उससे ''कडारा: कर्मधारये'' इस समास से पूर्व समास और प्राक् पद क्रियान्वित किया गया है यही सूत्र का अर्थ होता है। अर्थात् अष्टाध्यायी में पहले ''कडारात् समास:'' यहाँ से आरम्भ होकर कडारा कर्मधारय इस सूत्र से पूर्व विद्यमान सूत्रों में समास में यही पद और प्राक् लिये जा रहे हैं।

प्राक् इस आवर्ति का फल एक संज्ञा अधिकार में समास संज्ञा के साथ अन्ययीभाव आदि संज्ञाओं का समावेश होता है।

पाठगत प्रश्न-1

1. ''समर्थ: पदविधि:'' यह किस प्रकार का सूत्र है।
2. सूत्र में समर्थ इस पद का क्या अर्थ है।

टिप्पणियाँ

3. पदविधि क्या है?
4. ''समर्थः पदविधिः'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?
5. वृत्ति का लक्षण क्या है?
6. वृत्ति के कितने भेद होते हैं?
7. विग्रह का लक्षण क्या हैं?
8. विग्रह के कितने भेद होते है?
9. ''प्राक्कडारात्समासः'' यह किस प्रकार का सूत्र है?
10. ''प्राक्कडारात् समासः'' इस सूत्र में कडारापद से किसका ग्रहण होता है?

1.3 ''सह सुपा''

सूत्रार्थ–सुबन्त का सुबन्त के साथ समास होता है।

सूत्र व्याख्याः–यह संज्ञा सूत्र है। इससे समास संज्ञा होती है। इस सूत्र में दो पद हैं। उनमें **सह** अव्ययपद है। सुपा यह तृतीया विभक्ति एकवचनान्त पद है। ''सुबामन्त्रिते पराङ्गवत्स्वरे'' इस सूत्र से सुप पद की अनुवर्ती होती है। ''प्राक्कडारात्समासः'' इस सूत्र से समासः इस पद **अधिक्रियान्वित** किया गया है। ''प्रत्यय ग्रहणे यस्मात्स विहितस्तदादेसदन्तस्य च ग्रहणम्'' इस परिभाषा से सुप् प्रत्ययबोधक प्रत्याहार के ग्रहण से तदन्तविधि है। उस सुप् प्रत्यय से सुबन्तम् यह अर्थ और सुपा इस पद से सुबन्तेन यह अर्थ लिया गया है। और सूत्रार्थ होता है ''सुबन्त का सुबन्त के साथ समास होता है यह अर्थ लिया गया है। इसका तात्पर्य है कि सुबन्त का सुबन्त के साथ समास संज्ञा होती है। यहाँ यह भी जानना चाहिए कि इस सूत्र से विधीयमान समास संज्ञा उन दोनों सुबनतों के मध्य होता है जिन दोनों के मध्य एकार्थीभावसामर्थ्य है।

उदाहरणः–भूतपूर्व इत्यादि इस सूत्र के उदाहरण हैं। पूर्व भूतः यह लौकिक विग्रह है। पूर्व अम् भूत सु यह अलौकिक विग्रह है। पूर्व अम् इस सुबन्त का भूत सु इसके साथ सुबन्न को प्रकृत सूत्र से समाससंज्ञा प्राप्त होती है। उससे पूर्व अम् भूत सु यह समुदाय समास संज्ञक होता है। इसके बाद प्रक्रियाकार्य में भूतपूर्वः रूप सिद्ध होता है।

1.4 ''प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्''

सूत्रार्थ–समासविधायकशास्त्र में प्रथमान्त बोधित पद में उपसर्जन संज्ञा होती है।

सूत्र व्याख्या–यह संज्ञा सूत्र है। इस सूत्र से उपसर्जन संज्ञा होती है। इस सूत्र में तीन पद होते हैं। इसमें **प्रथमानिर्दिष्टं समासे उपसर्जनम्** यह पदच्छेद है। प्रथमानिर्दिलृम् पर प्रथमा विभक्ति का एकवचनान्त पद है। समासे पद में सप्तमी विभक्ति का एकवचनान्त पद है। उपसर्जनम् यह प्रथमा विभक्ति एकवचनान्त पद है। यहाँ प्रथमानिर्दिष्ट समास में संज्ञिदल को उपसर्जन संज्ञापद

है। प्रथमा से निर्दिष्ट प्रथमानिर्दिष्टम् इसमें तृतीया तत्पुरुष समास है। प्रथमानिर्दिष्टम् नामक पद प्रथमान्त बोधित होना चाहिए। समास में और इसमें समास विधायक सूत्र में यही अर्थ होता है। सूत्रार्थ होता है कि ''समास'' विधायक सूत्र में जहाँ प्रथमान्त बोधित पद की उपसर्जन संज्ञा होती है''। अर्थात् समासविधायक सूत्र में प्रथमान्तपद के बोधित अर्थ लक्ष्य में उपसर्जनसंज्ञा होती है।

उदाहरण–कृष्ण अम् श्रित सु इस अलौकिक विग्रह में ''द्वितीया श्रितातीतपतितगतात्यस्तप्राप्तापन्नैः'' इस सूत्र से समास संज्ञा होती है। इस सूत्र में द्वितीया प्रथमान्त पद है। उसका अर्थ द्वितीयान्त है। और प्रकृत लक्ष्य में कृष्ण अम् है। अतः उसकी इस सूत्र से उपसर्जन संज्ञा होती है।

पूर्व अम् भूत सु यहाँ ''सह सुपा'' इस सूत्र से समास संज्ञा की गई है। समासविधायक सूत्र है सहसुपा। और यहां पर सुप् इस पद की अनुवर्ती है। और वह प्रथमान्त है। और उसका बोध पूर्व अम् यह है भूत सु यह भी है। अतः उसका इस सूत्र से उपसर्जन संज्ञा होती है।

पूर्व अम् भूत सु यहाँ पर सहसुपा इस सूत्र से समाससंज्ञा की गई है। समासविधायक सूत्र है सह सुपा। और यहां पर सुप् पद की अनुवर्ती है और प्रथमान्त पद है। उसका बोध्य पूर्व अम् यह है, भूत सु यह भी है। अतः इन दोनों में भी उपसर्जन संज्ञा प्राप्त हुई है।

1.5 ''उपसर्जनं पूर्वम्'' (2.2.30)

सूत्रार्थ–समासे में उपसर्जन संज्ञक को पूर्व में प्रयोग करना चाहिए।

सूत्र व्याख्या–यह विधिसूत्र है। इस सूत्र में दो पद हैं। वहां उपसर्जन यह पूर्व ये दो पद प्रथमाविभक्ति एकवचनान्त है। ''प्राक्कडारात्समासः'' इस सूत्र से समास पद का अधिग्रहण किया गया है। उसका और प्रथमान्त का सप्तम्यन्त पद से विपरिणाम होता है। और समास में उपसर्जन पूर्व यह पदयोजना है। समास में उपसर्जनसंज्ञक का पूर्व में प्रयोग किया जाना चाहिए यही सूत्रार्थ है।

उदाहरण–इस सूत्र का उदाहरण यथा ''द्वितीयाकीतातीतपतितगतात्यस्तप्राप्तापन्नैः'' सूत्र है। कृष्णं श्रितः इस लौकिकविग्रह में कृष्ण अम् श्रित सु इस अलौकिक विग्रह में द्वितीया पद का प्रथमानिदिष्ट होने से उस बोध का कृष्ण अम् इसका ''प्रथमानिर्दिष्टं समास उपर्जनम्'' इससे उपसर्जन संज्ञा होती है। इसके बाद प्रकृतसूत्र से समास में उपसर्जनसंज्ञक का कृष्ण अम् इसका पूर्व निपात होता है। और प्रक्रिया कार्य में कृष्णश्रित यह रूप सिद्ध होता है।

और यहाँ पूर्व अम् भूत सु इस स्थिति में समासविधायक शास्त्र में ''सह सुपा'' यहाँ दोनों का सुबन्त के निर्देश से उन दोनों की उपसर्जन संज्ञा में उन दोनों का पूर्वनिपात प्राप्त होता है। परन्तु भगवान पाणिनी का सूत्र ''भूतपूर्वेचरट्'' विद्यमान है। यहाँ भूतशब्द का पूर्व प्रयोग दिखाई देता है। अतः उसके अनुरोध से भूतशब्द का ही पूर्व प्रयोग किया जाता है। न कि पूर्व शब्द का। इसके बाद भूत सु पूर्व अम् इस स्थिति में सुप् के लुक (लोप) के विधान के लिए यह सूत्र प्रवृत्त है।

टिप्पणियाँ

पाठगत प्रश्न-2

11. ''सह सुपा'' इस सूत्र से किस प्रकार का समास होता है?
12. ''सह सुपा'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?
13. ''सह सुपा'' इस सूत्र का क्या उदाहरण है?
14. ''प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्'' इस सूत्र से क्या होता है?
15. समास पद से ''प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्'' इस सूत्र में किसका ग्रहण किया गया है?
16. ''प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?
17. ''प्रथमानिर्दिष्टम्'' इस पद का क्या अर्थ है?
18. ''प्रथमानिर्दिष्टमं समास उपसर्जनम्'' इस सूत्र में संज्ञासंज्ञि निर्णय करो।
19. ''उपसर्जनं पूर्वम्'' इस सूत्र से क्या होता है?
20. ''उपसर्जनं पूर्वम्'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?
21. ''उपसर्जनं पूर्वम्'' इस सूत्र का एक उदाहरण दीजिये?

1.6 ''सुपो धातु प्रातिपदिकयो:''

सूत्रार्थ–धातु का और प्रातिपदिक के अवयव के सुबन्त का लुक् (लोप) होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से सुप् का लुक् (लोप) होता है। इस सूत्र में दो पद हैं। यहाँ पर सुप: यह षष्ठी एकवचान्त पद है और धाकप्रातिपदिकयो: षष्ठीद्विवचनान्त पद है। धातु और प्रतिपदिक का समासपद ''धातु प्रातिपदिके'' है। उन दोनों में धातु प्रातिपदिक में इतरेतरयोगद्वन्दसमास है। ''व्यक्षत्रियार्षञितो यूनिलुगणिञो:'' इस सूत्र से लुक पद का अनुपर्तन होता है। प्रस्तुत सूत्र का अर्थ धातु के और प्रातिपदिक के अवयव के सुबन्त (सुप) का लोप होता है।

''प्रत्ययस्य लुक्श्लुलुप:'' इस सूत्र के अनुसार प्रत्यय की अदर्शनलुक् संज्ञा होती है।

उदाहरण–इस सूत्र के धातु के अवयव के लुक का उदाहरण होता है ''पुत्रीयति''। आत्मन: पुत्रम् इच्छति इस विग्रह में ''सुप: आत्मन: क्यच्'' इस सूत्र से पुत्र अम् इस द्वितीयान्त से क्यच् होने पर पुत्र अम् क्यच् यह होने पर पुत्र अम् क्यच् इस समुदाय के क्यच् प्रत्यय होने पर ''सनाद्यन्ता धातव:'' इससे धातु संज्ञा होती है। यहाँ पुत्र अम् क्यच् यह समुदाय धातुसंज्ञक है। उसका अवयव अम् सुप् है। इस प्रकृत सूत्र से लुक् होता है। इसके पश्चात् प्रक्रियाकार्य में पुत्रीयति रूप सिद्ध होता है।

प्रातिपदिक के अवयव के लोप का उदाहरण भूतपूर्वः ऐसा है। भूत अम् पूर्व सु इस स्थिति में ''कृत्तद्धितसमासाश्च'' इस सूत्र से समास की प्रातिपदिक संज्ञा होती है। इसके बाद प्रकृतसूत्र से प्रातिपदिक के अवयव के ''सुपः सो अमश्च'' से लोप होता है। इसके बाद प्रक्रिया कार्य में भूतपूर्व रूप निष्पन्न होता है।

1.6.1 ''इवेन समासो विभक्त्थलोपश्च'' (वार्तिकम्)

वातिकार्य–इन इस शब्द के साथ सुबन्त की समास संज्ञा होती है। समास अवयव विभक्ति का लोप नहीं होता है।

वार्तिक व्याख्या–यह वार्तिक केवल समास विधायक है। इस वार्तिक में चौथा पद है। इवेन समासः विभक्त्पलोपः यह पदच्छेद है। यह इवेन तृतीया एकवचान्त पद है। समासः वियक्त्यलोपः ये दोनों यह प्रथमा विभक्ति के एकवचनान्त है। और अत्ययपद है। न लोपः अलोपः पद में नञ्तत्पुरुषसमास है। विभक्तेः अलोपः विभक्त्यलोपः यह षष्ठीतत्पुरुषसमास है। ''सुबामन्त्रिते पराङ्गवत्स्वरे'' इस सूत्र से सुप् पद की अनुवृत्ति हुई है। ''प्रत्ययग्रहणे यस्मात्स विहितः तदादेशस्तदन्तस्य ग्रहणम्'' इस परिभाषा से सुप् प्रत्ययबोधक का प्रत्याहार ग्रहण से तदन्त विधि है। उससे सुबन्त प्राप्त होता है। इवेन सह सुबन्तं समासः विभक्त्यलोपश्च यह पद योजना है। यहाँ वार्तिक अर्थ होता है'' इन शब्द के साथ सुबन्त को समास होता है। समास अवयव और विभक्ति का लोप नहीं होता है।

उदाहरण–इस वार्तिक का उदाहरण वागर्थाविव है। वाक् च अर्थः च इस वागर्थो इसमें इतरेतरयोगद्वन्द समास है। वागर्थौ इव इस लौकिक विग्रह में वागर्थ और इव इस अलौकिकविग्रह में प्रकृतकार्तिक से इव शब्द के साथ वागर्थ और इस सुबन्त का समास संज्ञा होती है। समास होने पर वागर्थ और इस पद का सुबन्त का प्रथमान्त बोध होने से ''प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्'' इस सूत्र से उपसर्जन संज्ञा होती है। और इसके बाद ''उपसर्जनंपूर्वम्'' इस सूत्र से उसका पूर्व प्रयोग होता है। उससे वागर्थ और इव यह स्थिती होती है। और इसके बाद समास के ''कृत्तद्धितसमासाश्च'' इस सूत्र से प्रातिपदिक संज्ञा होती है। प्रातिपदिक संज्ञा में सत्थ में ''सुपोधातुप्रातिपदिकयोः'' इससे प्राप्त के लुक् निषेध होने पर ''विभक्त्यलोपश्च'' इस वार्तिक से होता है। और वागर्थ औ इव इस स्थिति में ''वृद्धिरेचि'' इस सूत्र से आकार के और औकार के स्थान पर वृद्धि होने पर औकार होने पर ''एचोऽयवायावः'' इस सूत्र से औकार के स्थान पर आवादेश होने पर प्रक्रियाकार्य में सर्वसंयोग होने पर वागर्थाविव रूप निष्पन्न होता है।

पाठगत प्रश्न-3

22. ''सुपो धातुप्रातिपदिकयोः'' इस सूत्र से क्या होता है?

23. ''सुपो धातुप्रातिपदिकयोः'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?

24. ''धातुप्रातिपदिकयोः'' यहाँ पर कौन सी विभक्ति और कौन समास है?

टिप्पणियाँ

25. ''भूतपूर्व:'' यहाँ पर भूतशब्द का पूर्वनिपात कैसे होता है?

26. ''सुपो धातुप्रातिपदिकयो:'' इस सूत्र का क्या उदाहरण है?

27. ''इवेन समासो विभक्त्यलोपश्च'' इस वार्तिक का क्या अर्थ है?

28. ''इवेन समासो विभक्त्थलोपश्च'' इस वार्तिक का क्या उदाहरण है?

9.6 ''अव्ययीभाव:''

सूत्रार्थ–तत्पुरुष इस सूत्र से प्राक् अव्ययीभाव: अधिकार

सूत्र व्याख्या–पाणिनीय सूत्रों में यह अधिकार सूत्र है। यह संज्ञा अधिकार है। इस सूत्र में अव्ययीभाव यह प्रथमा विभक्ति का एकवचनान्त पद है। ततत्पुरुष:'' इस सूत्र से पहले प्राक् अव्ययीभाव: पद अधिग्रहण किया गया है। इस सूत्र से उत्तर ''तत्पुरुष'' इस सूत्र से प्राक् विद्यमान सूत्रों में अव्ययीभाव: पद अनुवर्ती हुई है। प्रतिसूत्रम् उपतिष्ठते यही भाव है। और इसके बाद जिन-जिन सूत्र से हित समास का अव्ययीभाव संज्ञा होती है। अत: यह संज्ञा अधि कार है।

9.6 ''अव्ययं विभक्ति समीप-समृद्धि-व्यृद्व्यर्थाभावात्ययाऽसम्प्रतिशब्दप्रादुर्भाव-पश्चात् यथाऽऽनुपूर्व्य-योंगपद्य-सादृश्य- सम्पत्ति-साकल्यान्तवचनेषु''

सूत्रार्थ–विभक्ति आदि अर्थों में वर्तमान अव्यम का सुबन्त के साथ नित्य समास होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से अव्ययीभाव समास होता है। इस सूत्र में दो पद है। यहाँ अव्यय यह प्रथमा एक वचनान्त पद हैं। ''विभक्ति-समीप-समृद्धि-व्यृद्ध्यार्थया वाऽल्ययाऽसम्प्रतिशब्दप्रादुर्भाव-पश्चाद्य थाऽऽनुपूर्व्य-यौगपद्य-सादृश्य- सम्पत्ति-साकल्याडन्तवचनेषु यही सप्तमी बहुवचनान्त पद है। वच् धातु से कर्म में ल्युट् होने पर वचन शब्द निष्पन्न होता है। जो बोला जाता है वचन उसका अर्थ है वाच्य:। विभक्तिश्च समीपश्च समृद्विश्च वृद्धिश्च अर्थाभावश्च अत्ययश्च असम्प्रतिश्च शब्दप्रादुर्भावश्च पश्चात् च यथा च आनुपूर्व्यं च यौगपद्यं च सादृश्यं च सम्पत्तिश्च साकल्य: च अन्त: च इस विग्रह में इतरेतरयोग में द्वन्द समास होने पर विभक्ति-समीप-समृद्धि-व्यृद्ध्यर्थाभावाऽत्ययाऽसम्प्रति-शब्द प्रादुर्भाव पश्चाद्यथाऽऽनुपूर्व्य-यौगपद्य सादृश्य-सम्पत्ति- साकल्याऽन्तवचना: यह शब्द निष्पन्न होता है। इसका ही सप्तमी बहुवचनान्त रूप सूत्र में होता है। ''द्वन्द्वान्ते श्रूयमाणं पदं प्रत्येकमभिसम्बध्यते'' इस न्याय से वचन शब्द का विभक्ति तक प्रत्येक सम्बन्ध होता है।

विभक्ति पद से यहाँ अधिकरण कारक का ग्रहण किया गया है। समीप नाम निकटता है। समृद्धि नाम उन्नति का है। बीत गई है ऋद्धि यह व्यृद्धि ऋद्धि का अभाव। अर्थ का अभाव: अर्थाभाव:। अति का ध्वंस होता है। सम्प्रति (अब) प्रयोग नहीं है असम्प्रति। शब्द प्रादुर्भाव नाम

शब्द का नाम प्रादुर्भाव: प्रसिद्ध है। जिस प्रकार शब्द की योग्यता वीप्सा-पदार्थानतिवृत्ति-सादृश्यानि इस प्रकार चार अर्थ हैं। पद का अर्थ ही पदार्थ है। नहीं है जिसमें अतिवृत्ति यही अनतिवृत्ति है। जो अतिक्रमण नहीं है वही अनतिक्रम अर्थ हैं अर्थात् सीमा से बाहर नहीं होना। पद के अर्थ की (अनतिवृत्ति) सीमा से बाहर न होने की स्थिति पदार्थानतिवृत्ति है। अर्थात् पद के अर्थ का अनुल्लङ्घन है। जिस प्रकार सादृश्य नाम तुल्यता। अनुपूर्वम् अनुक्रम: उसका भाव ही आनुपूर्व्यम् है। पूर्वता का क्रम यही अर्थ है। यौगपद्यम् का अर्थ है एककालता है। यथार्थता से सादृश्य के अर्थ के ग्रहण से पुन: सादृथ्य का सूत्र में किसलिए प्रश्न उत्पन्न होता है। यहाँ उत्तर तब तक सादृश्य के गौण होने पर भी समास के विधान के लिए सूत्र में पुन: सादृश्य ग्रहण किया गया है। ऋद्धि का आधिक्य समृद्धि:। सम्पत्ति का नाम अनुरूप आत्मभाव है। अर्थात् योग्य स्वचित भाव सम्पत्ति इससे कहा गया है। साकल्य का नाम सम्पूर्णता है। अन्त नाम समाप्ति का है।

इस सूत्र में ''सुबामन्तिपराङ्गवत्स्वरे'' इस सूत्र से सुप् ''सह सुपा'' इस सम्पूर्ण सूत्र का अनुवर्तन किया गया है। समास और अव्ययीभाव दो पद अधिकृत किया गया है। सुप् इस पद का तदत्तविधि से सुबन्त प्राप्त होता है। सुप का और तदत्तविधि से सुबन्त को प्राप्त करना चाहिए। समर्थ: पदविधि: इस सूत्र से समर्थ पद आता है। और तृतीयावचनान्त होने से विपरिभाग होने पर और उसके समर्थन से यह होता है। एवं ''विभक्ति आदि में वर्तमान अव्यय का सुबन्त का समर्थन से सुबन्त के साथ समास संज्ञा होती है। और वह समास अव्ययीभाव संज्ञक होता है। यही सूत्र का अर्थ आता है। विभक्त्यर्थक वाचक अव्यय का सुबन्त के समर्थ से सुबन्त के साथ समास संज्ञा होती है। और वह समास अव्ययीभाव संज्ञक होता है। और अन्य समीप अर्थक अव्यय का सुबन्त के समर्थन से सुबन्त के साथ समास संज्ञा होती है और वही समास अव्ययीभाव संज्ञक होता है। और क्रम से अन्य का भी होता है। 4. समृद्ध्यर्थक 5. वृद्ध्यर्थकम् 6. अर्थभावअर्थक 7. अव्ययार्थक 8. असम्प्रत्ति अर्थक 9. शब्दप्रादुर्भावार्थक 10. पश्चादर्थक 11. आनपूव्यर्थक 12. यौगयद्यार्थकम् 13. सादृश्यार्थक 14. सम्पत्त्यर्थक 15. साकल्यार्थक 16. अन्तार्थकम् अव्यय का सुबन्त के समर्थन सुबन्त के साथ समास संज्ञा होती है। और वह समास अव्ययीभावसंज्ञक होता है। और सूत्र के पठित अर्थों का वाचकों का अव्ययों के समर्थन से सुबन्त के साथ समास होता है यहीं फलितार्थ है।

अवधेयम्–सामान्यत: सूत्रोक्त स्वर से समास विधायक सूत्र के अर्थ प्रकट करने के लिए सुबन्त का सुबन्त के साथ समास संज्ञा होती है। ऐसा वाक्य लिखा जाना चाहिए। तथापि इसका तात्पर्य ग्रहण करके बहुत सारे स्थानों पर सुबन्त का सुबन्त के साथ समास होता है। इत्यादि रूप से भी प्रकट किये जाते हैं।

अत्रैदं वोध्यम् (यहाँ यह ज्ञान होना चाहिए)

इस सूत्र में अव्ययम् यह प्रथमान्त पद है। अत: इस सूत्र से जहाँ समास किया जाता है वहाँ अव्ययम् इस प्रथमान्त बोध का अत्यय की उपसर्जन संज्ञा होती है और उसका पूर्व प्रयोग होता है। अव्ययीभाव समास की ''अव्ययीभावश्च'' सूत्र से अव्यय संज्ञा होती है।

इस सूत्र से विधीयमान समास नित्य होता है। नित्य समास का प्राय: लौकिकविग्रह नहीं होता

है। अथवा अस्वपदलौकिक विग्रह होता है। अत एव अविग्रह अथवा अस्वपदविग्रह नित्यसमास होता है। जहाँ जिसका विग्रह नहीं है वह अविग्रह है। समास के अर्थबोधक वाक्य को विग्रह कहा जाता है। जिस समास का विग्रह नहीं होता है वह अविग्रह नित्य समास होता है। नहीं है अपने पदों से विग्रह जिसका वह अस्वपदविग्रह है। अर्थात् जिसका समास का सभी सामासिक पदों द्वारा विग्रह नहीं किया जाता है अपि तु सामासिक पदों के समानार्थक अन्य पद से समास किया जाता है, वह भी नित्य समास होता है। इस सूत्र में विधीयमान अव्ययीभाव अस्वपदविग्रह नित्यसमास होता है और इस सूत्र का उदाहरणों के अस्वपदविग्रह ही किया जाता है।

उदाहरण–इस सूत्र का उदाहरण नीचे दिये गये हैं।

अधिहरि–विभक्त्यर्थक वाचक अव्यय का सुबन्त के समर्थ से सुबन्त के साथ समास संज्ञा होती है। और वह समास अव्ययीभाव संज्ञक होता है। इसका उदाहरण है **अधिहरि।**

अधिहरि इसका हरौ यह लौकिक विग्रह है। हरि ङि अधि यह अलौकिक निग्रह है। यहां अधि इस अन्यय का सप्तमी विभक्ति के अर्थ का अधिकरण का वाचक है। उससे अधि अव्यय का विभक्त्यर्थकवाचक है। और हरि ङि अधि यह अलौकिक विग्रह में विभक्त्यर्थवाचक् 'अधि :'' अव्यय सुबन्त के समर्थ से हरि ङि इस सुबन्त के साथ समास संज्ञा होती है और वह समास अव्ययीभाव संज्ञक होता है। इसके बाद समास विधायक सूत्र में अव्यय इसका प्रथमा निर्दिष्ट होने से उसके बोध के अधि इसका ''प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्'' इससे उपसर्जन संज्ञा होती है। ''उपसर्जनं पूर्वम्'' इससे उसका पूर्व निपात होता है। उससे अधि हरि ङि यह स्थिति उत्पन्न होती है। इसके समास होने पर ''कृतद्धितसमासाश्च'' इस समास के प्रातिपादिक संज्ञा होने पर ''सुपोधातुप्रातिपदिकयो:'' इस प्रातिपदिक अव्यय का (सुप: डे: लुक्) विभक्ति का लोप हो जाता है। उससे अधिहरि रूप उत्पन्न होता है। इसके बाद ''एकदेशविकृतमनन्यवद्'' इस परिभाषा से अधि हरि ङि यहाँ पर प्रातिपदिक संज्ञा वह अधिहरि यहाँ पर 1 उससे प्रातिपदिक लेकर ''स्वौजसमौट्छष्टाभ्या-म्भिङेभ्याम्भ्यस्ङसिभ्या-म्भ्यस्ङसोसाम्ङ्योस्सुप'' इस सूत्र से क्रम से खादय विभक्तियाँ प्राप्त होती हैं। वहाँ प्रथम एकवचन होने पर सु प्रत्यय होने पर अधिहरि सु इस स्थिति में अधिहरि इसका ''अव्ययीभावश्च'' इस सूत्र से अव्ययसंज्ञा होने पर ''अव्ययादाप्सुप:'' इस सूत्र से सुप् का लोप होने पर अधिहरि यह रूप सिद्ध होता है। और अधिहरि इससे पर द्वितीयादिविभक्तियों का भी ''अव्ययादाप्सुप:'' इससे लोप होता है। अत: सभी विभक्तियों में अधिहरि यही रूप होता है।

पाठगत प्रश्न-4

29. ''अव्ययीभाव:'' यह सूत्र किस प्रकार का है?

30. ''अव्ययीभाव:'' इसका अधिकार कहाँ तक हैं?

31. ''अव्ययीभाव:'' इत्यादि सूत्र का अर्थ क्या है?

32. ''अव्ययं विभक्ति'' इत्यादि सूत्र में विभक्ति पद का क्या बोध होता है?

33. ''अव्ययं विभक्ति'' इत्यादि सूत्र में वचनशब्द का प्रत्येक का कैसे अन्वय हुआ है।

34. समृद्धि-सम्पत्ति में क्या भेद है?

35. पदार्थानतिवृत्ति का क्या नाम है?

36. यथार्थता के सिद्ध होने पर पुनः सूत्र में सादृश्य का ग्रहण किसलिए किया गया है।

यहाँ विभक्ति में अन्य उदाहरण अधिगोपम् होता है। तथाहि माः पाति इति इस विग्रह में गोपा शब्द निष्पन्न होता है। गोपि इस लौकिक विग्रह में गोपा ङि अधि इस अलौकिक विग्रह में समास संज्ञा होने पर उपसर्जन का पूर्वनिपात होने पर प्रातिपदिक से सुप् के ङे का लोप होने पर प्रक्रिया में अधिगोवा यह निष्पन्न होता है। तब विशेषकार्य साधना के लिए सूत्र कहा गया है।

(1.9) ''अव्ययीभावः च''

सूत्रार्थ–अव्ययीभाव समास संज्ञक शब्द नपुंसक होता है।

सूत्र व्याख्या–पाणिनीय सूत्रों में यह विधायक सूत्र है। इससे अव्ययीभावसमास का नपुंसकत्व विधान होता है। यह सूत्र दो पदात्मक है। यहाँ अव्ययीभाव ऐसा पदच्छेद है। अव्ययीभाव यह प्रथमा विभक्ति एकवचनान्त पद है। और अव्यय पद है। चकार से ''स नपुंसकम्'' इस सूत्र से नपुंसकम् इस पद को ग्रहण किया गया है। और ''अव्ययीभावसामससंज्ञक शब्द नपुंसक होता है।'' यही सूत्रार्थ है।

उदाहरण–अधिगोपा इस स्थिति में अव्ययीभाव समाजसंज्ञक के इसके प्रकृतसूत्र से नपुंसकसंज्ञा होने पर ''छस्वो नपुंसके प्रातिपदिकस्य'' इससे आकार के ह्स्व (लघु) होने पर अधिगोप शब्द निष्पन्न होता है। उसका प्रातिपदिक से इसके बाद प्रथमाविभक्ति के एकवचन होने पर सौ अधि गोप सु यह होने पर ''अव्ययीभावश्च'' इससे अव्ययीभाव का अव्ययसंज्ञा होने पर ''अव्ययादाप्सुपः'' इससे सु का लोप प्राप्त होने पर-

(9.10) ''नाव्ययीभावादतोऽम्त्वपञ्चम्याः''

सूत्रार्थ–अदन्त अव्ययीभाव से सुप् का लोप नहीं हो, और उसको पञ्चमी विभक्ति के बिना अमादेश होता है।

सूत्रव्याख्या–पाणिनीय सूत्रों में यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से अमादेश होता है। न अव्ययीभावाद् अतः अम् तु अपञ्चम्याः इति पदच्छेदः। यहाँ निषेधपरक अव्ययपद नहीं है। अव्ययीभावात् यह पञ्चमी एकवचनान्त पद है। अतः यह भी पञ्चमी एकवचनान्त पद है। न पञ्चमी अपञ्चमी यह नञ्तत्पुरुष समास है। यहाँ अतः यह पद अव्ययीभाव से इसका विशेषण है। विशेषण का

तदन्तविधि में अदन्त से अव्ययीभाव से होता है। इस सूत्र में ''अव्ययादाप्सुप:'' इस सूत्र से सुप: ऐसा षष्ठयन्त पद को ''व्यक्षत्रियार्ष ञितो यूनि लुगणिञो: इस सूत्र से लोप होने पर ऐसा प्रथमा एकवचनान्त की अनुवृत्ती होती है। अत्र सूत्र होने पर अत: अव्ययीभाव से सुप् न लोप इस एक वाक्य अम् तु अपञ्चम्या: यह दूसरा वाक्य है। अत: अव्ययीभाव से सुप् का लोप नहीं होने पर वाक्य का अर्थ होता है पञ्चमी को अम् नहीं होता है। और अदन्त अव्ययीभाव से पर सुप् लोप नहीं होता है किन्तु अमादेश होता है। पञ्चमी का लोप होता है और अमादेश नहीं होता है।

उदाहरण–अधिगोप सु ऐसा होने पर ''अव्ययीभावश्च'' इस से अव्ययीभाव का अव्ययसंज्ञा होने पर ''अव्ययादाप्सुप:'' इससे सुप् लोप प्राप्त होने पर अदन्त होने पर अव्ययीभाव संज्ञक होने पर अधिओप शब्द का इसके आगे सु अमादेश होने पर अधिगोप अम् ऐसा होने पर ''अभिपूर्व:'' इससे दोनों अकारों के स्थान पर पूर्वरूप एकादेश होने पर अकार होने पर ''अधि गोपम्'' यह रूप सिद्ध होता है।

पाठगत प्रश्न-5

37. ''अव्ययीभावश्च'' इस सूत्र से क्या विधान होता है।

38. ''अव्ययीभावश्च'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?

39. ''नाव्ययीभावादतोऽम्त्वपञ्चभ्या:'' इस सूत्र से क्या विधान होता है?

40. ''नाव्ययीभावादतोडम्त्वपञ्चम्या:'' इस सूत्र से क्या विधान होता है?

41. ''नाव्ययीभावादतोडम्त्वपञ्चम्या:'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?

(1.11) ''तृतीयासप्तम्योर्बहुलम्''

सूत्रार्थ–अदन्त अव्ययीभाव से तृतीया विभक्ति और सप्तमी विभक्ति का बहुल अमादेश होता है।

सूत्र व्याख्या–पाणिनीय सूत्रों में यह विधिसूत्र है। ''तृतीयासप्तम्योर्बहुलम्'' का बहुल अमादेश विधान के लिए यह सूत्र प्रवृत्त होता है। पदद्वयात्मक होने पर इस सूत्र में तृतीयासप्तमी का षष्ठीडिवचनान्त पद है। तृतीया च सप्तमी च तृतीयासप्तम्यो: में इतरेतरयोग द्वन्द समास है। बहुलम् यह प्रथमा एकवचनान्त पद है। पूर्व सूत्र से अत: अव्ययीभाव से अम् इस तीन पदों की अनुवर्ती हुई। और ''अदन्त अव्ययीभाव से तृतीयासप्तमी के बहुल अमादेश होता है। यही सूत्रार्थ फलित होता है।

पूर्वसूत्र से प्राप्त नित्य के अमादेश इस सूत्र के बाहुलता से विधान होता है। यहाँ बहुल ग्रहण से तृतीया और सप्तमी होने पर कहीं पर अमादेश होता है और कहीं नहीं होता है।

उदाहरण–समीप अर्थ में अव्ययीभाव समास का उदाहरण उपकृष्णम् हैं। कृष्णस्थ समीपम् (कृष्ण के समीप) इस लौकिक विग्रह होने पर कृष्णङ्स उप इस अलौकिकविग्रह में ''अव्ययं विभक्ति.....'' इत्यादिसूत्र से समीप अर्थ में विद्यमान उप इस अव्यय कृष्ण ङस् इस समर्थ होने से सुबन्त के साथ अव्ययीभाव समास संज्ञा होती है। इसके बाद अव्यय इसका प्रथमानिर्दिष्ट होने से बोधित होने पर उप की उपसर्जन संज्ञा होने पर उसका पूर्व निपात होने पर उपकृष्ण ङस् होता है। इसके बाद ''कृत्तद्धितसामासाश्च'' इस सूत्र से प्रातिपादिक होने से सुप् ङ्स का लोप होने पर उपकृष्ण रूप सिद्ध होता है। ''एकदेशविकृत न्याय'' से उसका प्रातिपदिक होने के बाद प्रथमा एकवचन में सौ उपकृष्ण+सु होने पर ''अव्ययीभावश्च'' इससे समास की अव्ययसंज्ञा होने पर ''अव्यथादाप्सुपः'' इससे सुप् का लोप होने पर उसको बाधकर ''नाव्ययीभावादन्तोऽम्त्वपञ्चम्याः'' इस सूत्र से सु को अमादेश होने पर ''अभिपूर्वः'' सूत्र द्वारा द्वो अकार के स्थान पर पूर्वरूप एकादेश होने पर उपकृष्णम् प्रयोग सिद्ध होता है।

वहाँ उपकृष्ण शब्द से तृतीया एकवचन की विवक्षा में टाप् प्रत्यय उपकृष्ण टा इस स्थिति में सुप् का लोप प्राप्त को बाधकर ''नाव्ययी भावादतोऽम्त्वपञ्चम्याः'' इस सूत्र से टा प्रत्यय का नित्य अमादेश प्राप्त होता है। उसको बाधकर ''तृतीयासप्तम्योर्बहुलम्'' इस प्रस्तुत सूत्र से बहुलक से अमादेश होता है। अम् पक्ष में पहले के समान प्रक्रियाकार्य में उपकृष्णम् रूप सिद्ध होता है। और अम भाव पक्ष में ''टाङसिङसामिनात्स्थाः'' इस सूत्र से इन आदेश होने पर उपकृष्ण+इन होने पर ''आदगुणः'' इस सूत्र से अकार और इकार के स्थान पर एकार गुण होने पर उपकृष्णेन रूप हुआ। और सप्तमी होने से उपकृष्णम् और उपकृष्णे ऐसा दो रूप हुए।

समृद्धि अर्थ में अव्ययीभाव समास का उदाहरण होता है सुमद्रम्। मद्राणां समृद्धि इस लौकिक विग्रह में मद्र आम् सु ऐसा अलौकिकविग्रह होने पर ''अव्ययं विभक्ति'' आदि सूत्र से समृद्धि अर्थ में विद्यमान सु इस अव्यय को मद्र आम् इसके समर्थ से सुबन्त के साथ अव्ययीभावसमास संज्ञा होती है। इसके बाद उपसर्जन संज्ञक का सु इस अव्यय का पूर्व निपात होने पर सु मद्र आम् यह होता है। इसके बाद समास के प्रातिपदिक होने पर उसके अवयव के सुपः आम लुकि निष्पन्न होने पर प्रातिपदिक होने पर समुद्र इससे प्रथमा एकवचन में सौ समुद्र सु ऐसा होने पर ''नाव्ययीभावादतोऽम्त्वपञ्चम्याः'' इससे भी सु के स्थान पर अमादेश होने पर दोनों अकारों के स्थान पर पूर्व रूप होने पर तसुमद्रम्'' रूप निष्पन्न होता है। बहुलग्रहण सामर्थ्य से यहाँ सप्तमी होने पर नित्य अमादेश होता है। उससे सुमद्रम् यही रूप होता है। किन्तु सुमद्रे में नहीं।

व्यृद्धि अर्थ में अव्ययीभाव समास का उदाहरण दुर्यवनम्। यवनानां व्यृद्धिः इस लौकिक विग्रह और यवन् आम् दुर् यह अलौकिक विग्रह है।

अर्थ अभाव अर्थ में अव्ययीभावसमास का उदाहरण होता है अतिहिमस् हिमस्थ अत्ययः यह लौकिक विग्रह और हम ङ्स अति यह अलौकिक विग्रह है।

असम्प्रति अर्थ में अव्ययीभाव समास का उदाहरण होता है अतिनिद्रम्। निद्रा सम्प्रति न युज्यते यह लौकिक विग्रह है। निद्रा ङ्स अति यह अलौकिक विग्रह है।

पश्चात् अर्थ में अव्ययीभाव समास का उदाहरण हौ अनुविष्णु। विष्णोः पश्चात् यह लौकिकविग्रह है। विष्णु ङ्सु अनु यह लौकिक विग्रह है।

टिप्पणियाँ

योग्यतारूप में यथा अर्थ में अव्ययीभावसमास का उदाहरण होता है अनुरूपम्। रूपस्थ योग्यम् यह लौकिक विग्रह है। रूप ङ्स अनु यह अलौकिक विग्रह है।

वीप्सारूप में यथा अर्थ में अव्ययीभावसमास का उदाहरण है प्रत्यर्थम्। अर्थम् अर्थम् प्रति यह लौकिक विग्रह है। अर्थअम् प्रति यह अलौकिक विग्रह है।

पदार्थानतिवृत्तिरूप में यथा अर्थ में अव्ययीभावसमास का उदाहरण है। यथाशक्ति शक्तिम् अनतिक्रम्य यह लौकिकविग्रह है और शक्ति अम् यथा यह अलौकिक विग्रह है।

सादृश्यरूप में यथार्थ में अव्ययीभावसमास का उदाहरण है सहरि। हरेः सादृश्यम् यह लौकिक विग्रह में हरिङस् सह यह अलौकिक विग्रह में ''अव्ययविभक्ति-इत्यादि सूत्र से सादृश्य अर्थ में विद्यमान के साथ इस अव्यथ का हरि ङस् इस समर्थन से साथ अव्ययीभावसमास संज्ञा होती है। इसके वादं उपसर्जन संज्ञक का सह के साथ पूर्व निपात में सह हरि ङस् ऐसा होने पर समास के प्रातिपदिक होने पर उसके अनयव सुपः ङ्सः लुकि सहहरि पद निष्पन्न होता है। इसके बाद सह इसका स आदेश विधायक सूत्र है। (अगले सूत्र देखा जाना चाहिए)

पाठगत प्रश्न-6

42. ''तृतीयासप्तम्योबर्हुलम्'' यह सुत्र किस प्रकार का है?

43. ''तृतीयासप्तम्योबर्हुलम्'' इस सूत्र से क्या विधान होता है?

44. ''तृतीया सप्तम्योबर्हुलम्'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?

45. समीप अर्थ में अव्ययीभावसमास का क्या उदाहरण है?

46. समृद्धयर्थ में अव्ययीभावसमास का उदाहरण क्या है?

47. व्यृद्धि अर्थ में अव्ययीभावसमास का क्या उदाहरण है?

48. अर्थ अभाव अर्थ में अव्ययीभाव समास का क्या उदाहरण है?

49. अति के अर्थ में अव्ययीभाव समास उदाहरण क्या हैं?

50. असम्प्रति अर्थ में अव्ययीभावसमास का क्या उदाहरण है?

51. शब्दप्रादुर्भाव अर्थ में अव्ययीभावसमास का क्या उदाहरण है?

52. पश्चात् अर्थ में अव्ययीभावसमास का उदाहरण क्या है।

53. यथाअर्थ में अव्ययीभावसमास का अर्थ लिखो।

54. वीप्सा अर्थ में अव्ययीभावसमास का उदाहरण लिखो।

55. पदार्थ के अनतिवृत्ति में अव्ययीभाव समास का उदाहरण लिखो?

(1.12) ''अव्ययीभावे चाकाले''

सूत्रार्थ–सह शब्द का स आदेश होता है अव्ययीभाव में, कालविशेष वाचक और उत्तरपद में पर होने पर नहीं होता है।

सूत्र व्याख्या–पाणिनीय सूत्रों में यह विधि सूत्र है। इस सूत्र से सह शब्द के स आदेश होता है। त्रयपदात्मक इस सूत्र में अव्ययीभाव में सप्तम्येकवचनान्त पद है। और यह अव्यय पद है। अकाल होने पर सप्तम्येकवचनान्त पद है। ''सहस्य सः संज्ञायाम्'' इस सूत्र से सह इसके षष्ठयन्त पद सः यह प्रममात्त और पद अनुवर्न्तन। ''अलुगुन्तर पदे'' इस सूत्र से उत्तरपद होने पर पद की अनुवर्ती हुई है। न काले अकाले यह नञ्तत्पुरुषसमास। कालशब्द से यहाँ कालविशेषवाचक पूर्वाछ आदि तक ग्रहण किया गया। और सह शब्द का सादेश (सह = स) होता है अव्ययीभाव समास में। कालविशेषवाचक उत्तरपद के परे न होने पर यही सूत्रार्थ है।

उदाहरण–सह हरि इस स्थिति में प्रकृतसूत्र से सह शब्द के स्थान पर स आदेश निष्पन्न होने पर प्रातिपादिक से सु अवयव से समास के ''अव्ययादाप्सुपः'' इससे सुप् लुक होने पर सहरि पद निब्पन्न हुआ। सचक्रम्, ससखि, साग्नि इत्यादि इसके सूत्र का उदाहरण है।

आनुपूर्व्य अर्थ में अव्ययीभाव समास का उदाहरण होता है। अनुज्येष्ठम्। ज्येष्ठस्य आनुपूर्व्येण यह लौकिक विग्रह है। ज्येष्ठ सुस् अनु यह अलौकिक विग्रह है।

यौगपद्य अर्थ में अव्ययीभाव समास का उदाहरण है सचक्रम्। चक्रेण युगपद् यह लौकिक विग्रह है। ज्येष्ठ ङस् अनु यह अलौकिक विग्रह है। सहचक्र इस स्थिति में ''अव्ययीभावे चाकाले'' इस प्रस्तुत सूत्र से सहशब्द का स आदेश निष्पन्न होने पर प्रातिपादिक होने पर सचक्र इससे प्रथमा एकवचन में प्रक्रियाकार्य में सचकम् यह रूप है।

सादृश्य अर्थ में अव्ययीभाव समास का उदाहरण है। ससखि। सख्या सदृशः लौकिक विग्रह है और सखिटा सह यह अलौकिक विग्रह है। यहाँ भी प्रस्तुत सूत्र से सह शब्द का सादेश होता है।

साकल्य अर्थ में

साकल्य अर्थ में अव्ययीभाव समास का उदाहरण होता है सतृणम्। तृणम् अपि अपरित्यज्य यह लौकिक विग्रह है और तृण टा सह यह अलौकिक विग्रह है। यहाँ भी प्रस्तुत सूत्र से सहशब्द के स्थान पर स आदेश होता है।

अन्त अर्थ में अव्ययीभाव समास का उदाहरण है साग्नि। अग्नि ग्रन्थ पर्यन्तम् यह लौकिक विग्रह है और अग्नि टा सह यह अलौकिक विग्रह है। यहाँ भी प्रस्तुत सूत्र से सहशब्द का सादेश होता है।

पाठगत प्रश्न-7

56. ''अव्ययीभावे चाकाले'' इस सूत्र से क्या विधान होता है?

टिप्पणियाँ

57. ''अव्ययीभावे चाकाले'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?

58. ''अव्ययीभावे चाकाले'' इस सूत्र का क्या उदाहरण है?

59. ''आनुपूर्व्यार्थे अव्ययीभाव समास का क्या उदाहरण है?

60. यौगपद्य अर्थ में अव्ययीभाव समास का क्या उदाहरण है?

61. सादृश्यार्थे में अव्ययीभाव समास का क्या उदाहरण है?

62. सम्पत्ति अर्थ में अव्ययीभाव समास का क्या उदाहरण है

63. अन्त अर्थ में अव्ययीभाव समास का क्या उदाहरण है?

(1.13) ''यावदवधारणे''

सूत्रार्थ–अवधारण अर्थ में यावत अव्यय का सुबन्त के समर्थ से समास संज्ञा होती है, और वह समास अव्ययीभाव संज्ञक होता है।

सूत्र व्याख्या–पाणिनीय सूत्रों में यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से अव्ययीभाव समास का विधान होता है। द्वि पदात्मक इस सूत्र में यावत् इस अव्ययपद के अवधारण होने पर सप्तम्येकवचनान्त पद है। **अवधारण नाम इयत्त ताप परिच्छेद है।** इस सूत्र में ''समर्थः पदविधिः'' इस समर्थ अधिग्रहित किया जाता है। ''सह सुपा'' सूत्र अनुवर्तन होता है। समर्थ का विशेषण होने से तदन्त विधि में सुबन्तेन होता है। समास यह अव्ययीभाव यह अधिकृत किया गया है। एवं अवध ारणे अर्थ में यावत् इस अव्यय का सुबन्त से समर्थ के साथ समास संज्ञा होती है और वह समास अव्ययीभावसंज्ञक होता है यही सूत्रार्थ है। इस सूत्र में विग्रह वाक्य में यावत् इस तद्वितान्त का उपयोग होता है समास में तो यावत् इस अव्यय का विशेष अर्थ है।

उदाहरणम्–इस सूत्र का उदाहरण होता है यावच्छलोकम्। यावन्तः श्लोकाः इस लौकिक विग्रह में यावत् श्लोक जस् इति अलौकिक विग्रह में प्रकृत सूत से अवधारण अर्थ में विद्यमान के यावत् इस अव्यय श्लोक जस् इस समर्थ से सुबन्त के साथ अव्ययीभावसमाससंज्ञा होती है। इसके बाद ''प्रथमानिर्दिष्टं समास उपरार्जनम्'' इस समास विधायक सूत्र में प्रथमा निर्दिष्ट का यावत् इसकी उपसर्जन संज्ञा होने पर उसका पूर्व निपात होने पर यावत् श्लोक जस् ऐसा होने पर समास के प्रातिपदिकत्व होने से उसके अवयव के सुप का जस प्रत्यय का लोप होने पर यावत् श्लोक होने पर चुत्व होने पर और छत्त्वे होने से निष्पन्न प्रातिपदिक यावत् श्लोक इससे प्रथमा एकवचन में सु के स्थान पर अमादेश होने पर प्रक्रियाकार्य में **यावच्छलोकम्** यह रूप निष्पन्न होता है।

1.14 ''सुप्प्रतिना मात्रार्थे''

सूत्रार्थ–मात्र अर्थ में विद्यमान प्रति के साथ समर्थ का सुबन्त का अव्ययीभाव संज्ञा होती है।

सूत्र व्याख्या–पाणिनीय सूत्रों में यह विधि सूत्र है। इस सूत्र से अव्ययी भाव समास का विधान होता है। त्रयपदात्मक इस सूत्र में सुप् इस प्रथमान्त प्रति से तृतीयान्त और मात्रार्थ में सप्तम्यन्त पद है। मात्र अर्थ नाम लेश है। इस सूत्र में ''समर्थपदविधि:'' इससे समर्थ अधिगृहित किया गया है। ''सह सुपा'' इस सूत्र की अनुवृत्ति होती है। समास: इस अव्ययीभाव में दो पद अधिकृत किया गया है। और मात्र अर्थ में विद्यमान से प्रति के साथ समर्थ सुबन्त को अव्ययीभावसंज्ञा होती है यही सूत्रार्थ है।

उदाहरण–इस सूत्र का उदाहरण होता है शाकप्रति। शाकस्य लेश: इस लौकिक विग्रह होने पर शाक डस् प्रति ''अलौकिकविग्रह होने पर प्रकृतसूत्र से मात्र अर्थ में विद्यमान के प्रति इस अव्यय के साथ सह शाक डस् इससे समर्थ का सुबन्त को अव्ययी भाव संज्ञा होती है। इसके बाद ''प्रथमानिर्दिष्ट समास उपसर्जनम्'' इस समास विधायक सूत्र में सुबन्त का प्रथमानिर्दिष्ट होने पर उसके बोधक का ज्ञाक ङस् इसकी उपसर्मन संज्ञा होने पर उसका पूर्व नियात होने पर **शाक ङस्** प्रति ऐसा होने पर समास का प्रातिपदिक से अवयप का सुप का ङस् प्रत्यय का लोप होने से प्रातिपदिक से शाक प्रति इससे प्रथमा एकवचने सु होने पर, अव्ययत्व होने से सु का लोप होने पर शाक प्रति यह रूप निष्पन्न होता है।

(1.16) समासान्ता:

सूत्रार्थ–पञ्चम का चतुर्थपाद का परिसमाप्ति तक समासान्त अधिकार है।

सूत्र व्याख्या–यह अधिकार सूत्र है। इस समासान्त अधिकार का विधान होता है। पञ्चम अध्याय का चतुर्थपाद का परिसमाप्ति तक यह सूत्र का अधिकार है। उससे इस सूत्र से पर पञ्चमाध्याय परि समाप्ति तक जब तक विद्यमान सूत्रों के द्वारा विहित कार्य का समासान्त संज्ञा होती हैं।

(1.17) अव्ययीभावेशरत्प्रभुतिभ्य:

सूत्रार्थ–अव्ययीभाव समास होने पर शरदादि प्रातिपदिक से पर समासान्त तद्धितसंज्ञक टच् प्रत्यय होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधि सूत्र है। समासान्त के टच् प्रत्यय के विधान के लिए यह सूत्र प्रवृत्त होता है। इस सूत्र में दो पद हैं। वहाँ अव्ययीभाव होने से सप्तमी एकवचनान्त को शरद आदि तक पञ्चमी बहुवचनान्त पद है। ''तद्धिता:'', ''समासान्ता:'' ''प्रत्यय'', ''परश्च'', ''ङयाप्प्रातिपदिकात्'' इस पञ्च सूत्र का अधिकार है। सरत प्रञ्तति येषां ते शरत्प्रभृतय: तेभ्य: शरद् प्रभुतिभ्य: (शरद आदि हैं जिनके वे.... तद्गुणसंविज्ञान बहुव्रीहि समास है। तराजाह: राखिभ्य: टच्'' इस सूत्र से ट्च प्रञ्मान्त की अनुवृत्ति है। एवं अव्ययीभाव समास होने पर शरहादि से प्रातिपदिक से पर समासान्त तद्धित संज्ञक टच् प्रत्यय होता है।

उदाहरण–इस का उदाहरण है उपशरदम्। शरद: समीप इस लौकिक विग्रह होने पर शरद् ङस्

उप इसका अलौकिक विग्रह होने पर ''अव्यय विभक्ति....'' इत्यादि सूत्र से अव्ययीभाव समास होने पर उपशरद शब्द निष्पन्न होता है। तब शरदादि अण में शरद शब्द पढ़ा गया है। अत: उपशरद इस अव्ययीभाव संज्ञा होने पर प्रस्तुत सूत्र से समासान्त टच् प्रत्यय होता है। टच् के टकार का और ''चुटू'' इस चकार का ''हलन्त्यम्'' यह संज्ञा होने पर इत्संज्ञा होने पर ''तस्यलोप:'' यह लोप होने पर उपशरद् अ होता है। इसके बाद सर्वसंयोग होने पर निष्पन्न होने पर उपशरद इस प्रातिपदिक से सुके स्थान पर अम् होने पर प्रक्रिया कार्य में **उपशरदम्** रूप निष्पन्न होता है। इस प्रकार ही प्रतिविपाशम् उपजरसम् इत्यादि रूप सिद्ध होते हैं।

पाठगत प्रश्न-8

71. ''नदीभिश्च'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?

72. ''नदीभिश्च'' इस सूत्र का क्या उदाहरण है?

73. समाहार अर्थ में एवं ''नदीभिश्च'' इस सूत्र से समास कैसे होता है?

74. ''तद्धिता'' इस सूत्र का अधिकार कहाँ तक है?

75. ''समासान्ता:'' इस सूत्र का अधिकार कहाँ तक है?

76. ''अव्ययीभावे शरत्प्रभृतिभ्य'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?

77. ''अव्ययीभावे शरत्प्रभृतिभ्य:'' यहाँ शरद् प्रभृति: यहाँ कौन सा समास है।

78. ''अव्ययीभावे शरत्प्रभृतिभ्य:'' इस सूत्र का क्या उदाहरण है?

1.20. ''अनश्च''

सूत्रार्थ–पाणिनीय सूत्रों में विधि सूत्र है। समासान्त टच् प्रत्यय के विधान यह प्रवृत्त हुआ है। इस सूत्र में दो पद होते हैं। वहाँ अन यह पञ्चमी एकवचनान्त और अव्यय पद है। अव्ययीभाव में शरद आदि इससे स्वीकृत का अव्ययीभाव होने पर इसके विभक्तिविपरिणाम से अव्ययीभाव से होता है। अव्ययीभाव से होता है। अव्ययीभाव से इस विशेषण से अन: तदन्त विधि में अन्नन्ताद् से होता है। ''लद्धिता:'' तसमासान्ता:'' तप्रत्यय:'' तपश्च'' ''ङ्याप्प्रातिपदिकात्'' पञ्चक सूत्र का अधिकार सूत्र है। ''राजाह: सखिभ्यष्टच्'' इस सूत्र से टच् के प्रथमान्त की अनुवृत्ति होती है। और अन् अदन्त से अव्ययीभाव से पर समासान्त तद्धिसंज्ञक टच् प्रत्यय होता है यही सूत्रार्थ है।

1.21. ''नस्तद्धिते''

सूत्रार्थ–नान्त (न हो अन्त में जिसके) के असंज्ञक के टि का लोप होता है तद्धित पर में होने पर।

''सूत्र व्याख्या'' पाणिनीय सूत्रों में यह विधि सूत्र है। उपराजन् अ इस स्थिति होने पर (न अन्त वाले) नान्त का उपराजन् इस टि लोप विधान के लिए यह सूत्र प्रवृत्त होता है। इस सूत्र में दो पद होते हैं। वहाँ न का षष्ठीवचनान्त तद्धित होने पर सप्तमी एकवचनान्त पद है। ''भस्य'' यह अधिकृत सूत्र है। ''टेः'' इस सूत्र से टेः इस षष्ठयन्त पद की अनुवृत्ति होती है। ''अल्लोपोडनः'' इस सूत्र से लोप के प्रथमान्त पद की अनुवृत्ति होती है। नः पद भ का विशेषण है।

पूर्व+ +पर

अतः तदन्त विधि में नकारान्त का होता है। ''नकारान्त यसंज्ञक का टि का लोप होता है तद्वित पर में होने पर यही सूत्र का अर्थ है।

उदाहरण–अव्ययीभाव समास होने पर उपराजन् अ इस स्थिति होने पर तद्धित प्रत्यय होने पर टच् प्रत्यय होने पर 'यचिभम्' इससे भसंज्ञा होती है। इसके बाद प्रस्तुत सूत्र से भसंज्ञक उप राजन् शब्द के टि का अन् लोप होने पर उपराज् अ य होने पर सर्वसंयोग होने पर निष्पन्न होने पर उपराज शब्द से यु, यु का अम् होने पर प्रक्रिया कार्य में उपराजम्रूप निष्पन्न होता है।

(1.22) ''नपुंसकादन्यतरस्याम्''

सूत्रार्थ–नपुंसक अन् अन्त से अव्ययीभाव से पर समासान्त का तहितसंज्ञक टच् प्रत्यय विकल्प से होता है।

सूत्र व्याख्या–पाणिनीय सूत्रों में यह विधि सूत्र है। विकल्प से समासान्त टच् विधान के लिए यह प्रवृत्त हुआ है। इस सूत्र में दो पद होते हैं। यहाँ नपुंसक से पञ्चमी एक वचनान्त का और अन्यतरस्य का विकल्प अर्थक अव्ययपद है। ''अनश्च'' इस सूत्र से अनः इस का ''अव्ययीभावशरद्प्रभृतिः'' यहाँ से अव्ययीभाव होने पर विशेषणत्व होने से अन् का तदन्त विधि में अत्रन्तात् होता है। ''राजाहः सखिभ्यष्टच्'' इस सूत्र से टच् इस प्रथमान्त की अनुवृत्ति होती है। ''तद्धिताः'' ''समासान्ता'' ''प्रत्ययः'', ''परश्च'' ''ङ्याप्प्रातिपदिकात्'' इन पञ्चक सूत्रों का अधिकार है। और 'नपुंसक से अन् अन्त से अव्ययीभाव से पर समासान्त तद्धित संज्ञक का टच् प्रत्यय विकल्प से होता है।'' यही सूत्र का अर्थ है।

उदाहरण–इस सूत्र का उदाहरण है उपचर्मम्। चर्मणः समीपम् इति इस लौकिक विग्रह में चर्मन् ङस् उप यह अलौकिक विग्रह होने पर ''अव्ययं विभक्ति...'' आदि सूत्र से अव्ययीभाव समास होने पर उपचर्मन् शब्द निष्पन्न होता है। उपचर्मन् इस अव्ययीभाव समास के अत्रत्व नपुंसक होने पर विद्यमान मान से इस सूत्र से विकल्प से समासान्त टच् प्रत्यय होता है। टच् पक्ष होने पर उपचर्मन् अ इस स्थिति होने पर ''नस्तद्धिते'' इस सूत्र से तहित में टच् प्रत्यय होने पर ''याचिभम्'' इससे भसंज्ञक उपचर्मन् शब्द के टि का अनलोप होने पर सर्वसंयोग होने पर उपचर्म शब्द निष्पन्न होता है। इसके बाद उपचर्म शब्द सुका अम् होने पर प्रक्रियाकार्य में उपचर्यम् रूप निष्पत्र होता है। टच् अभाव पक्ष में उपचर्मन् प्रतिपादिक से सु का लोष होने पर ''न लोपः प्रातिपदिकान्तस्थ' इससे न लोप होने पर उपचर्म रूप निष्पन्न होता है।

1.23 ''झयः''

सूत्रार्थ- क्षयन्त अव्वयीभाव से पर समासान्त तहित टच् प्रत्यय विकल्प से होता है।

सूत्र व्याख्या :- पाणिनीप्रणीत छः विधि सूत्रों में यह विधि सूत्र है। विकल्प से समासान्त टच् प्रत्यय विधायक यह सूत्र है। इस सूत्र में क्षयः यह पञ्चमी एकवचनान्त पद है। ''अव्ययीभावेशरत्प्रमृतिम्यः'' यहाँ से अव्ययीभाव में पद की अनुवृत्ति है। अव्ययीभाव में इसका विभक्ति विपरिणाम से **अव्ययीभावाद्** होता है। अव्ययीभाव से इस विशेषण से (क्षयः) क्षि का तदन्त विधि होने पर क्षयत्तात् होता है। ''नपुंसकादन्यतरस्थाम्'' इस सूत्र से अन्यतरस्याम् पद की अनुवृत्ति होती है। ''राजाहः सखिभ्यश्च'' इस सूत्र से टच् इस प्रथमान्त पद की अनुवर्ती होती है। ''समासान्ताः'', ''तद्विताः'' ''प्रत्ययः'' ''परश्च'' यह चार सूत्र अधिकार हैं। क्षयन्त अव्यर्थाभाव से पर समासान्त तहित से टच् प्रत्यय विकल्प से होता है यही सूणर्थ है।

उदाहरणः- इस सूत्र का उदाहरण है उपसमिधम्। समिधः समीपम् इस लौकिकविग्रह में समिध् ङस् उप यह अलौकिक विग्रह होने पर ''अव्यय विभक्ति--'' इस सूत्र से अव्ययीभाव समाज होने पर पर उपसमिध् शब्द निष्पन्न होता है। उपसमिध इस अव्ययीभाव का चकार का क्षय होने पर प्रस्तुत सूत्र में विकल्प से उससे समासान्त टच् प्रत्यय होता है। टच् पक्ष में उपसमिध् अ इस स्थिति होने पर सु की प्रक्रियाकार्य में उपसमिधम् रूप होता है। टच् के अभाव में उपसमिध इस प्रातिपदिक से सु उपसमित यह रूप है।

पाठगत प्रश्न-9

79. ''अनश्च'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?

80. ''अनश्च'' इस सूत्र का क्या उदाहरण है?

81. ''नस्तद्धिते'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?

82. ''नस्तद्धिते'' इस सूत्र का क्या उदाहरण है?

83. ''नपुंसकादन्यतरस्याम्'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?

84. ''नपुंसकादन्यतरस्याम्'' इस सूत्र का क्या उदाहरण है?

85. ''क्षयः'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?

86. ''क्षयः'' इस सूत्र का क्या उदाहरण है?

पाठसार

पदविधियों में अन्यतम का समास होता है। उसके समास का लक्षण है- ''पाणिनीयसङ्केक्तसम्बन्ध समासपदवत्त्वम्'' (पाणिनी के सङ्केक्त सम्बन्ध से समासपदवत् है। समास में जिन सामाजिक पद हैं उनका ''समर्थः पदविधिः सूत्र द्वारा बलपूर्वक समर्थ होते हैं। समान अर्थ होने पर समाज

में एकार्थीभाव का सिद्धान्त है।

समास के भेद विषय में बहुत सी विप्रतिपत्तियाँ हैं। सामान्यतया पाँच भेद होते हैं- 1. केवलसमास 2. अव्ययीसमास 3. तत्पुरुषसमास 4. द्वन्दसमास और 5. बहुत्रीहि समास। उनमें इस पाठ मे केवलसमास का और अव्ययीभावसमास का विवरण किया गया है।

अव्ययीभाव, तत्पुरुष, बहुव्रीहि, द्वन्द इत्यादि में विशेष संज्ञा विनिर्मुक्त समास होता है केवलसमास। अव्ययीभाव में प्राय: पूर्वपदार्थप्रधान होता है। यहाँ ''समर्थ:पदविधि'' इस सूत्रवर्णन अवसर में वृत्तिविग्रह आदि पारिभाषिक शब्दों का विवेचन किया गया। इसके बाद समास अधिकार कहां तक है इस बोधक ''प्राक्कडारात्समास:'' यह सूत्र प्रस्तुत किया गया। इस सूत्र के सामर्श्य से ''कडारा: कर्मधारये'' यहाँ से प्राकृ पर्यन्त समास अधिकार है। परन्तु ''सहसुपा'' इस सूत्र का ''इवेन सह समासो विभक्त्यज्ञोपश्च'' इस वार्तिक का केवलसमासविधायक का प्रतिपादन हुआ। वहाँ प्रसङग् से उपसर्जन संज्ञा विधायक ''प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्'' और इस पूर्वनियात विधायक ''उपसर्जनपूर्वम्'' पर सूत्र प्रस्तुत किया गया। इसके बाद समास का प्रातिपदिक संज्ञक का अवयनभूत का सूत्र लोपविधायक को ''सुणेधातुप्रातिपडिकया:'' सूत्र की व्याख्या की गई है।

अव्ययीभावसमास के अधिकार बोधक सूत्र हैं ''अव्ययीभाव:''।

इसके बाद ''अव्ययं विभक्ति समीप-समृद्धि-व्यृद्ध्यर्थाभावाऽत्ययाऽसम्प्रति-शब्दप्रादुर्भाव पश्चात्-यथाऽऽनुपूर्व्य- यौगपद्य-सादृश्य-सम्पत्ति-साकल्यान्तवचनेषु'' इस सूत्र का अव्ययीभाव समास संज्ञक का व्याख्यान अवसर पर बहूनि अव्ययीभाव कार्य विधायक सूत्रों की व्याख्या की गई। वहाँ ''अव्ययीभावश्च'' अव्यय भाव का नपुंसकत्वविधायक सूत्र है। गोपि इस विग्रह में अधिगोप इस स्थिति में अदत्त अव्ययीभाव से पर सु का अमादेश विधायक ''नाव्ययी भावादतोऽभ्त्वपञ्चभ्या:'' और ''तृतीयासप्तम्योर्बहुलम्'' इन दोनों सूत्रों की व्याख्या की गई।

इसके बाद हरे:सादृश्यम् इस लौकिक विग्रह में सह हरि इस स्थिति में सह का स आदेश विधायक सूत्र ''अव्ययीभावेचाकाले'' प्रस्तुत किया गया। इसके बाद ''अव्ययीभावसमास विध ायक सूत्र ''यावदवधारणे'' ''सुग्रतिना मात्रार्थे'' ''संख्या वेश्येन'' ''नदीभिश्च'' ये चार सूत्र इस पाठ में प्रस्तुत किया गया है। इससके बाद ततद्धिता: ''समासान्ता:'' इन दो अधिकार सूत्रों का वर्णन विहित है। ''अव्ययीभावेशरत् प्रभृतिभ्य:'' ''अनश्च'' इस अव्ययीभावसमासान्त का टच् प्रत्यय विधायक दोनों सूत्रों की व्याख्या की गई है। इसके बाद उपराजम् इत्यादि में टि लोप के लिए ''नस्तद्धिते'' सूत्र की व्याख्या की गई है। उससे टच् पर को विकल्प से विधायकसूत्र ''नपुंसकारन्यतरस्याम्'' ''झथ:'' ये दो सूत्र प्रस्तुत किये गये। इस पाठ में केवल सामस के अव्ययीभाव समास के विधायक और उससे सम्बन्धीकार्य विधायक सूत्रों का प्रतिपादन किया गया है।

पाठान्त प्रश्न

1. ''प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्'' सूत्र की व्याख्या की गई?

2. ''अव्ययंविभक्ति'' इत्यादि सूत्र की व्याख्या की गई है?
3. उपकृष्णम् कप की सिद्धि कीजिये?
4. अधिहरि यह रूप सिद्धि कीजिये?
5. यथाशक्ति रूप को सिद्ध कीजिये?
6. ''संख्यावंश्येन'' इस सूत्र की व्याख्या की गई?
7. ''अव्ययीभावे चाकाले'' इस सूत्र की व्याख्या की गई है?
8. ''अव्ययीभावे शरत्प्रभृतिभ्य:'' इस सूत्र की व्याख्या की गई?
9. उपशरदम्'' रूप को सिद्ध करो?
10. उपसमिघम् रूप को सिद्ध करो?

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

उत्तर-1

1. परिभाषासूत्रम्
2. समर्थ आश्रित
3. पदसम्बन्धी विधि
4. पदसम्बन्धी जो विधि वह समर्थ आश्रित होता है।
5. परार्थ का अभिधान (कथन) वृत्ति।
6. पञ्च (पाँच)
7. वृत्ति अर्थक बोधक वाक्य को विग्रह कहते है।
8. विग्रह के दो भेदों में।
9. अधिकारसूत्र
10. तकडारा: कर्मधारये'' सूत्र का ग्रहण।

उत्तर-2

11. दो सुबन्तों का समास होता है।
12. सुबन्त का सुबन्त के साथ समास होता है।
13. भूतपूर्व:

14. उपसर्जनसंज्ञा
15. समास विधायक सूत्र का ग्रहण
16. समास विधाायक सूत्र में जो प्रथपान्त का बोधित उपसर्जन संज्ञा होती है?
17. प्रथमानिर्दिष्ट नाम प्रथमान्तपद बोधित होना चाहिए।
18. प्रथमानिर्दिष्टं समास होने पर संज्ञिदल और उपसर्जन संज्ञापद है।
19. उपसर्जन संज्ञक का पूर्व निपात होता है।
20. समास में उपसर्जन संज्ञक का पूर्व प्रयोग होना चाहिए यह सूत्र का अर्थ है।
21. कृष्णाश्रित

उत्तर-3

22. लुक (लोप) होता है।
23. धातु और प्रातिपदिक के अवयव के द्युप् का लुक् (लोप) होता है।
24. धातु और प्रातिपदिक में षष्ठी विभक्ति होती है। इतरेतरयोग द्वन्द है।
25. भूतपूर्वे चरट् (भूतपूर्व में चरट्) इस निर्देश से।
26. भूतपूर्वः
27. द्वव शब्द के साथ सुबन्त की समास संज्ञा होती है। समास के अवयव की विभक्ति का लोप नहीं होता है।
28. वागर्थविव।

उत्तर-4

29. अधिकार सूत्र।
30. तत्पुरुष इस सूत्र से पहले (प्राक्) अव्ययीभाव का अधिकार है।
31. विभक्ति आदि अर्थों में वर्तमान अव्यय का सुबन्त के साथ नित्य समास होता है।
32. विभक्तिपद अधिकरणकारक बोधित होता है।
33. ''द्वन्द्वान्ते श्रूथमाणं पदं प्रत्येकमभिसम्बध्यते'' इस न्याय से वचन शब्द का विभक्ति आदि से प्रत्येक सम्बन्ध होता है।
34. ऋद्धेराधिक्यं समृद्धिः सम्पत्ति नाम अनुरूप आत्मभाव।
35. पदार्थ का अनुलङ्घन।

टिप्पणियाँ

36. सादृश्य के गौण होने पर भी समास विधान के लिए सुत्र में पुनः सादृश्य ग्रहण किया गया है।

उत्तर-5

37. नपुंसकत्वं का विधान होता है।

38. अव्ययीभाव संज्ञक शब्द नपुंसक होता है।

39. विधि सूत्र।

40. अमादेश।

41. अदन्त अव्ययीभाव से सुप् का लोप नहीं होता है, और उसका पञ्चमी के बिना अमादेश होता है।

उत्तर-6

42. विधि सूत्र।

43. अमादेश।

44. अदत्त अव्ययीभाव से तृतीया और सप्तमी के बहुल का अमादेश होता है।

45. उपकृष्णम्।

46. सुमद्रम्

47. दुर्यवनम्

48. निर्मक्षिकम्।

49. अतिहिमम्

50. अतिनिद्रम्।

51. इतिहरि।

52. अनुविष्णु।

53. अनुरूपम्।

54. प्रत्यर्थम्।

55. यथाशक्ति।

उत्तर-7

56. सह शब्द का स आदेश होता है।

57. सह शब्द का स आदेश होता है अव्ययीभाव होने पर, काल विशेष वाचक उत्तरपद पर होने पर नहीं होता है।

58. सहरि

59. अनुज्येष्ठम्।

60. सचक्रम्।

61. ससखि।

62. सक्षत्रम्।

63. साग्नि।

उत्तर-8

64. अवधारण अर्थ होने पर यावत इस अव्यय का सुबन्त के समर्थ के साथ समास संज्ञा होती है। और यह समास अव्ययीभाव संज्ञक होता है।

65. यावच्छालोकम्।

66. मात्र अर्थ में विद्यमान प्रति के साथ समर्थ का सुबन्त की अव्ययीभाव समास संज्ञा होती है।

67. शाकप्रति।

68. वेश्यवाचक सुबन्त के साथ संख्यावाचक सुबन्त को विकल्प से समास संज्ञा होती है और वह अव्ययीभाव संज्ञक होता है।

69. त्रिमुनि।

70. दो प्रकार के।

उत्तर-9

71. नदी विशेषवाचक सुबन्त के साथ संख्यावाचक सुबन्त का विकल्प से अव्ययीभाव समास संज्ञा होती है।

72. पञ्चगङ्गम्।

73. ''समाहारे चापामिथ्यते'' इस सूत्रस्थ वार्तिक बल से।

74. पञ्चम अध्याय समाप्ति पर्यन्त।

75. पञ्चम अध्याय के चतुर्थ वाद के परिसमाप्ति तक इस सूत्र का अधिकार है।

76. अव्ययीभाव समास में शरद आदि प्रातिपदिक से पर (आगे) समासान्त से तद्धित संज्ञक टच् प्रत्यय होता है।

टिप्पणियाँ

77. उसके (संज्ञा के) गुणसंविज्ञान में बहुव्रीहि समास होता है।

78. उपशरदम्।

उत्तर-10

79. अदन्त अव्ययीभाव समासान्त तहिक संज्ञक टच् प्रत्यय होता है।

80. उषराजम्

81. तद्धित पर में होने पर नान्त (न अन्त वाले) टि (अन्) का लोप होता है।

82. उपराजन्।

83. नपुंसक अदन्त अव्ययीभाव से पर समासान्त तहित संज्ञक टच् प्रत्यय विकल्प से होता है।

84. उपचर्मम्।

85. झयन्त अव्ययीभाव से पर समासान्त तद्धित को टच् प्रत्यय विकल्प से होता है।

86. उपमिघम्।

प्रथम पाठ समाप्त